दादा भगवान परिवार का

नवम्बर २०२२

शुल्क प्रति नकल : ₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

दादा, द पज़ल सॉल्वर

दादा, द पज़ल सॉल्वर

संपादकीय

दुनिया में तरह-तरह की कलाएँ हैं। हर एक आर्टिस्ट के पास कला होती है, इंजीनियर के पास इंजीनियरिंग की कला, वकील के पास वकालत की कला इत्यादि। लेकिन क्या इन कलाओं से लाइफ के सभी प्रॉब्लम्स सॉल्व हो सकते हैं? नहीं!

सीखने जैसी कला तो वह है जिससे लाइफ की सभी प्रॉब्लम्स सॉल्व हो जाए और लाइफ ईज़ी हो जाए। दादाश्री के पास ऐसी ही सुंदर कलाएँ थीं जिससे वे अपनी लाइफ की उलझनों को सॉल्व करते थे और साथ-साथ दूसरों की भी सॉल्व कर देते थे।

चलो, इस अंक में पढ़ते हैं कि दादाश्री किस तरह अलग-अलग अवसरों पर अपनी अनोखी कला द्वारा प्रॉब्लम्स सॉल्व किए। साथ ही साथ दादाश्री के दर्शन की अद्भुत महत्वता को समझें और कभी भी दर्शन का लाभ लेने से न चूकें।

-डिम्पल मेहता

वर्ष : १० अंक: ८
अखंड क्रमांक: ११६
नवम्बर - २०२२

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : ९३२८६६११६६/७७
email:akramexpress@dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Multiprint
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2022, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

Today's special
आलु-चिली चले घूमने!
AALOO CHILLY
आलु, तुम बेस्ट हो! तुम हमेशा मेरा सामान उठाते हो।
तुम्हारा सामान तो मेरे सामान से भी ज्यादा है!
और तुमने दो कैमरे क्यों लिए हैं?
एक कैमरे से तुम पूज्यश्री का वीडियो लेना और दूसरे से मैं ड्रोन की तरह उड़कर फोटो लूँगा।
हाँ, हम पूज्यश्री के ३६५ फोटो खींच लेंगे।
हाँ, रोज एक देखेंगे! और हम दादा के साथ सेल्फी भी लेंगे!

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : बोधकला अर्थात् क्या?

पूज्यश्री : बोधकला अर्थात् चाहे जैसा भी पज़ल हो, उसका सॉल्यूशन ले आना। दादा के पास यह गिफ्ट थी कि वे किसी को दोषित देखे बिना, किसी को दुःख दिए बिना, किसी भी परिस्थिति को गुनहगार देखे बिना, प्रॉब्लम्स सॉल्व कर देते थे। यह बोधकला कहलाती है। ऐसा एडजस्टमेन्ट लेते थे कि अंदर समाधान हो जाए और सॉल्यूशन आ जाए।

प्रश्नकर्ता : तो क्या हम भी बोधकला डेवेलप कर सकते हैं ?

पूज्यश्री : हाँ, कर सकते हैं न। सत्संग सुनते-सुनते समझ बढ़ेगी। फिर जब छोटे-बड़े प्रॉब्लम्स आएँ तो किसी को दोषित देखे बिना, किसी को दुःख दिए बिना सॉल्व करना। ऐसे सॉल्व करते-करते शक्ति बढ़ जाती है। और आपके पास तो दादा की रेडीमेड बातें हैं, तो उनका उपयोग कर सकते हो। तो धीरे-धीरे आपकी शक्ति बढ़ेगी।

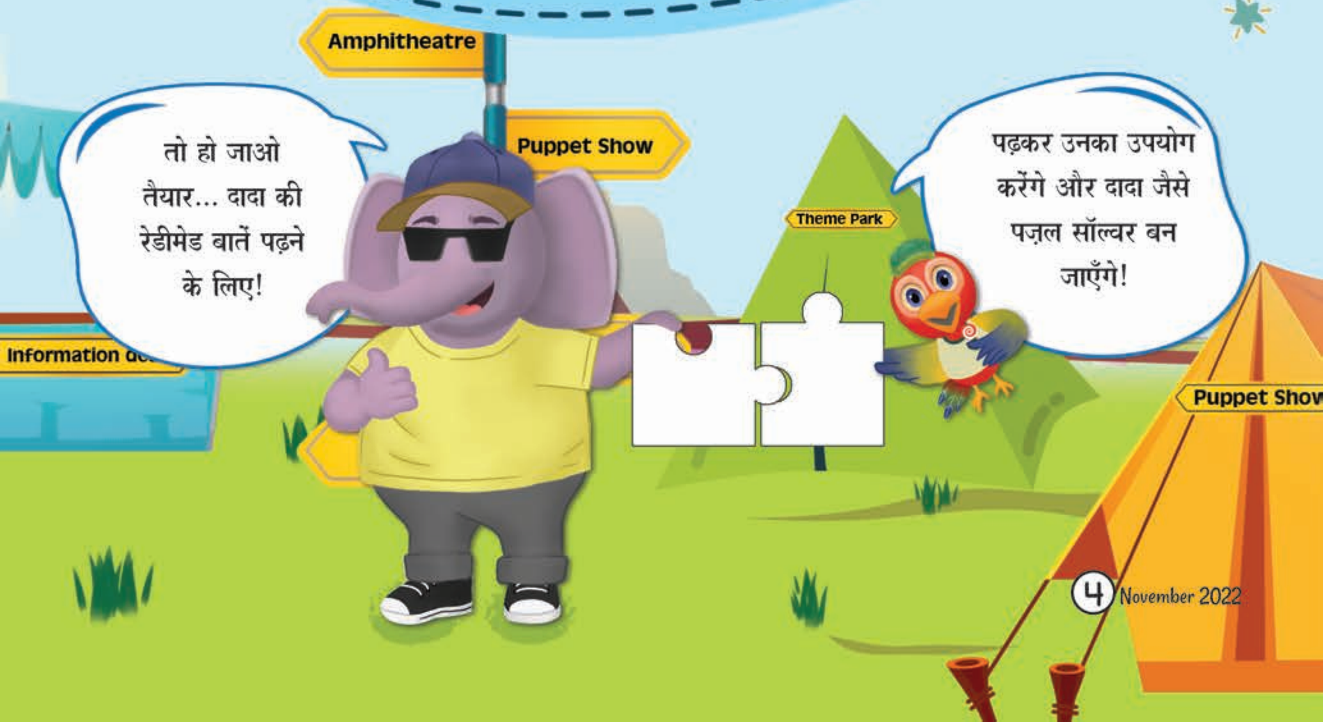

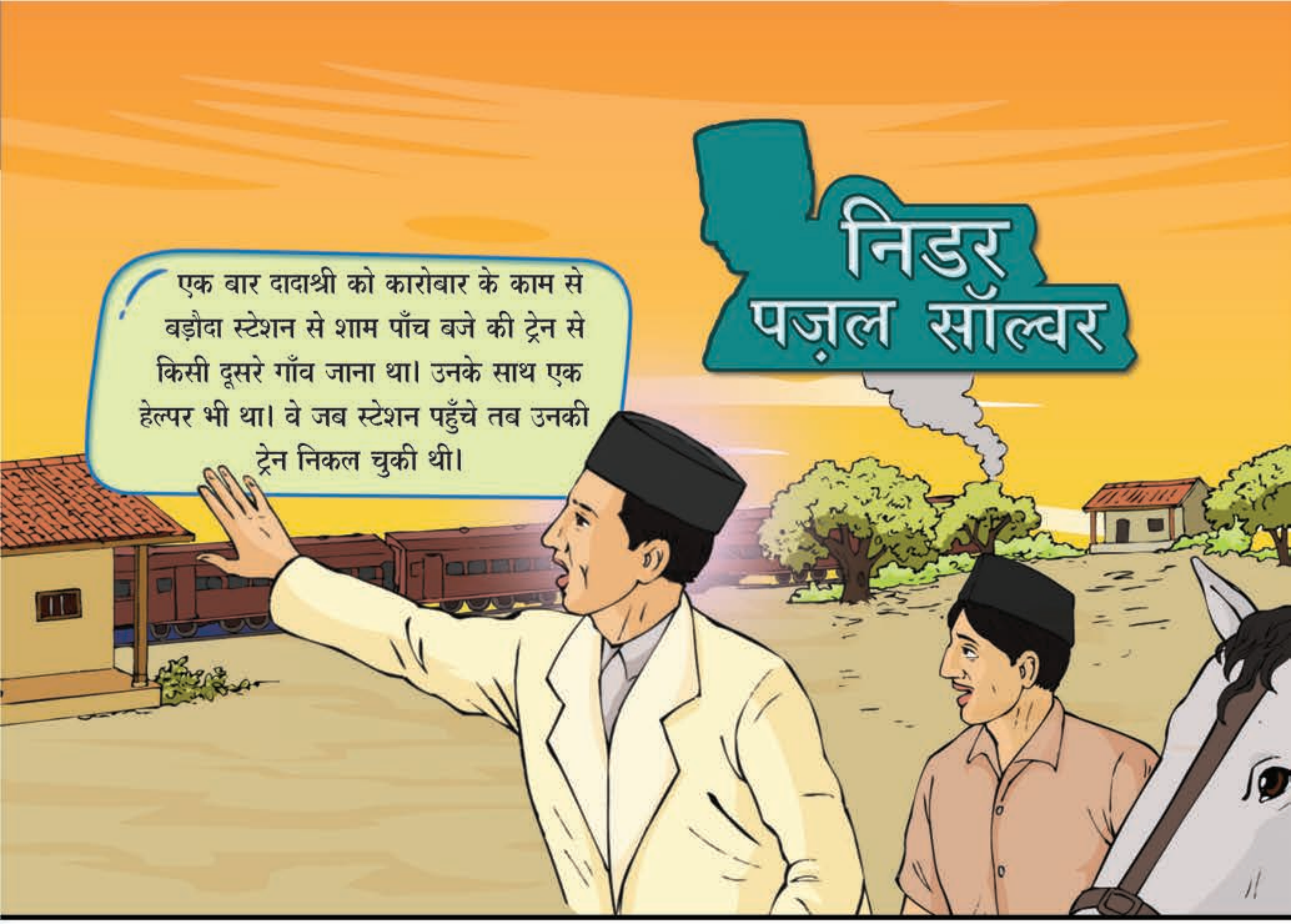
निडर
पज़ल सॉल्वर
एक बार दादाश्री को कारोबार के काम से बड़ौदा स्टेशन से शाम पाँच बजे की ट्रेन से किसी दूसरे गाँव जाना था। उनके साथ एक हेल्पर भी था। वे जब स्टेशन पहुँचे तब उनकी ट्रेन निकल चुकी थी।

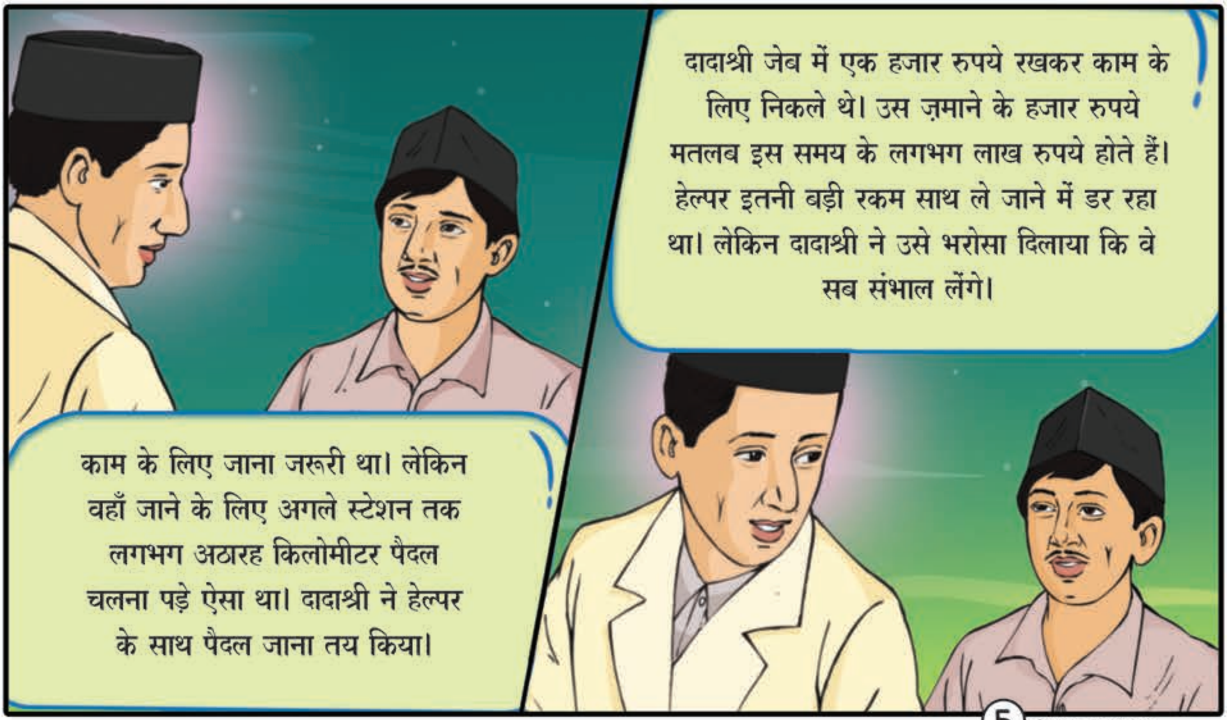
काम के लिए जाना जरूरी था। लेकिन वहाँ जाने के लिए अगले स्टेशन तक लगभग अठारह किलोमीटर पैदल चलना पड़े ऐसा था। दादाश्री ने हेल्पर के साथ पैदल जाना तय किया।
दादाश्री जेब में एक हजार रुपये रखकर काम के लिए निकले थे। उस ज़माने के हजार रुपये मतलब इस समय के लगभग लाख रुपये होते हैं। हेल्पर इतनी बड़ी रकम साथ ले जाने में डर रहा था। लेकिन दादाश्री ने उसे भरोसा दिलाया कि वे सब संभाल लेंगे।

लगभग १२ किलोमीटर चलने के बाद दोनों ने एक गाँव में चाय-नाश्ता किया। आगे का रास्ता थोड़ा ख़तरनाक था। उस गाँव के तालाब के किनारे बैठकर लुटेरे मुसाफिरों को लूटा करते थे।

एक तरफ अँधेरा और दूसरी तरफ लुटेरों का डर। हेल्पर घबरा गया। लेकिन दादाश्री ने कहा कि वे सब संभाल लेंगे। हेल्पर से कहा कि वह अपनी लंगोट में हजार रुपये बाँधकर रख दे।

थोड़ा आगे जाने पर उन्हें तालाब के पास ४-५ लुटेरे बैठे दिखाई दिए। अँधेरी रात में वे भयानक लग रहे थे। दादाश्री ने हेल्पर को उनके पीछे-पीछे चलने को कहा।
थोड़ा भी डरे बिना दादाश्री लुटेरों के पास गये।
अरे, तुम कहाँ से आए?
हमारे पास टिकट के पैसे नहीं थे, इसलिए पैदल-चलते आए हैं। आप मिले तो अच्छा हुआ। चलो, आराम से बैठकर बीड़ी पीते हैं। बीड़ी सुलगा दो न! मेरी माचिस ख़तम हो गई है, माचिस दो न!
लुटेरे ने बीड़ी सुलगा दी।
इसके पास तो माचिस के भी पैसे नहीं हैं। यह तो हम पर बोझ बन जाए ऐसा है।
लो भैया, सुलग गई न? अब यहाँ से चलते बनो।
और इस तरह गरीब होने की ऐक्टिंग करके दादाश्री लुटेरों के जाल से बच निकले।
दादाश्री को ऐसे सुपर आइडियाज़ कहाँ से आते थे?! अब से, यदि मैं अंधेरे में फँस गया तो मैं भी बिना डरे बाहर निकलने का रास्ता ढूँढ लूँगा।

अंधेरे में कौन है!?

यह बात १९३२ की है। रात के लगभग साढ़े ग्यारह बजे थे। अंबालाल भाई, यानी कि हमारे दादाश्री, साइकिल पर घर जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि महुआ के पेड़ के नीचे आग की लपटें जलती और बुझती हुई दिखाई दी।
अंबालाल भाई ने लोगों से सुना था कि महुआ के पेड़ पर भूत रहते हैं। आग की लपटें देखकर उन्हें यकिन हो गया कि यहाँ भूत है। एक तरफ तो उन्हें थोडा डर लग रहा था लेकिन दूसरी तरफ उन्होंने सोचा कि यहाँ से वापस तो नहीं जाना है।
अंबालाल भाई की पहले से ही आदत थी कि जहाँ कहीं अड़चन आए, जहाँ कहीं डर लगे उसका सामना करना, भाग नहीं जाना। उन्हें पहले से ही यह विश्वास था कि "मुझे कुछ नहीं होगा।"
इसलिए उन्होंने साइकिल की स्पीड बढ़ाई, बहुत स्पीड बढ़ाई और सीधा जाकर आग की लपटों पर कूद पड़े।
तभी किसी की आवाज़ आई,
"ओह साहब, मार डाला मुझे!"

अंबालाल भाई ने कड़क आवाज में पूछा,
"अरे, कौन तुम्हें मार डालेगा? इस समय यहाँ क्या कर रहे हो?"
उस व्यक्ति ने कहा,
"बीड़ी सुलगाने के लिए माचिस की तीली जला रहा था। तेज़ हवा होने के कारण तीली बुझती जा रही है। इसलिए दो-तीन तीलियाँ एक साथ जलाई।"
तब अंबालाल भाई को समझ में आ गया कि यह तो माचिस की तीली की लपटें दिख रही थीं। लपटें थीं तो छोटी परन्तु उन्हें बड़ी दिखाई दे रही थीं क्योंकि अगर एक बार भूत है ऐसी शंका हो जाय तो फिर जैसी हमारी कल्पना होगी वैसा ही दिखाई देगा।
Amphitheatre
Puppet Show
दादा कितने बहादुर थे! वहाँ से भागे नहीं। मैं तो पिक्चर में भी भूत देखकर डर जाता हूँ।
अरे, वह तो म्यूज़िक और दूसरे इफेक्ट्स डालकर हमें झूठ-झूठ डराते हैं। दादा ने कहा न, 'सभी काल्पनिक भूत हैं!'

वर्ल्ड का आश्चर्य

ज्ञानी को तो देखते ही रहना है। ज्ञानी के सिर्फ दर्शन ही करने चाहिए। ज्ञानी पुरुष के दर्शन मात्र से सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

करोड़ों जन्मों के पुण्य इकट्ठा होने पर ज्ञानी पुरुष के दर्शन मिलते हैं।

'ज्ञानी' के दर्शन मात्र से अनंत जन्मों के पाप भस्मीभूत (नष्ट) हो जाते हैं!

ज्ञानी पुरुष के सिर्फ दर्शन करेगा तो भी आने वाले विघ्न (प्रॉब्लम्स) कम हो जाते हैं। ज्ञानी पुरुष के दर्शन मात्र से सभी अंतराय टूट जाते हैं।

दादा के दर्शन करने के बाद दुःख दूर न हो तो वे दादा नहीं।

ज्ञानी पुरुष के दर्शन कभी मत चूकना। रात को जागरण करके, रात्रि-जगरण करके भी यह दर्शन कर लेना। यह दर्शन वर्ल्ड का आश्चर्य कहलाता है!

ज्ञानी पुरुष के दर्शन करने से मन अच्छा होता है, मन मजबूत होता है, वाणी अच्छी होती है, विचार अच्छे होते हैं।

यदि कोई ज्ञानी पुरुष का ध्यान करता है तो उसे तीर्थंकर के दर्शन होते हैं।

ज्ञानी पुरुष के एक ही बार यथार्थ दर्शन करता है तो उसका कल्याण हो जाता है।

जैनिस्तान
एक बार 'मामा की पोल' (मुहल्ले का नाम) में थोड़े जैन लोग इकट्ठे होकर गुस्से में चर्चा कर रहे थे। दादाश्री वहाँ से गुजरे। उन्हें 'जैनिस्तान' शब्द सुनाई पड़ा।
क्या बातें हो रही हैं?
हम अब गवर्नमेंट से हमारा अलग जैनिस्तान माँगने वाले हैं।
वैसे तो सभी समझदार और बुद्धिमान लोग हैं। फिर भी उन्हें ऐसे भेदभाव करने का विचार आया?!

सुनिए भाई, आपके माँगने से और दबाव डालने से आपकी बात स्वीकार हो भी जाए लेकिन क्या आपने यह सोचा है कि आपका काम फिर किस तरह चलेगा?
आप सब व्यापारी हो। तो फिर नाई, घोड़ागाड़ी वाला, बढ़ई, राजमिस्त्री, वह सब कहाँ से लाओगे? और इन सब के बिना आपका काम कैसे चलेगा?
दादाश्री ने उन लोगों को आधा घंटा समझाया। सब शांत हो गए।
यह तो बहुत बड़ी गलती है। ऐसा तो मांगना ही नहीं चाहिए!
Puppet Show
ormation
हाँ, इतने सारे लोगों का गुस्सा थोड़ी ही देर में छूमंतर कर दिया!
दादा तो एकदम कूल हैं!

नई तरह की खोज

एक बार दादाश्री बस से सफर करने वाले थे। वे एक घंटा पहले ही बस-स्टॉप पर पहुँच गए। बस आने में समय था इसलिए वे चाय-नाश्ता करने चले गए।
સમય પત્રક
वापस आने में थोड़ी देर हो गई और उनकी आँखों के सामने ही बस निकल गई।
टिकट काउन्टर पर पूछने पर पता चला कि दूसरी बस डेढ़ घंटे बाद है।
अब, उलझन यह थी कि डेढ़ घंटा कैसे गुज़ारें। इसी उलझन के बीच दादाश्री को एक आइडिया आया।

किसी भी चीज़ या व्यक्ति की प्रतिक्षा करना, उस जैसी कोई मुर्खता नहीं है। लेकिन अब इंतजार करने के अलावा कोई चारा भी नहीं है। तो फिर इस समय का क्यों न सदुपयोग कर लूँ?!
दादाश्री तो आँखें बंद करके भक्तिपद बोलने लगे।
पद बोलते समय दादाश्री को समझ में आया कि आँखें बंद करके बोलते समय एक-एक शब्द अक्षर के साथ दिखाई देता है। चित्त, शब्द पढ़ने में एकाग्र रहता है तो मन में दूसरे विचार आने बंद हो जाते हैं और आनंद रहता है।
अपनी नई तरह की खोज से दादाश्री खुश हो गए। समय का सदुपयोग करने का उन्हें बहुत संतोष हुआ।
तुम्हें पता चला? अब फन फेयर की लाइन में इंतजार करना पड़े तो करना, बेईमानी करके आगे मत चले जाना!
Information desk
हाँ, अब मैं मेरी स्वीट आवाज में आँखें बंद करके एक-एक अक्षर पढ़ सकूँ इस तरह गाऊँगा... दादा भगवान के असीम...

दादा के प्रसंग को दर्शाते इस चित्र में अपने मनपसंद कलर भरो और २० नवम्बर के पहले उसका फोटो हमारे साथ ९३१३६६५५६२ पर शेयर करें। और हाँ, सबसे अच्छे कलर भरने वाले का फोटो अगले अंक में जाएगा।

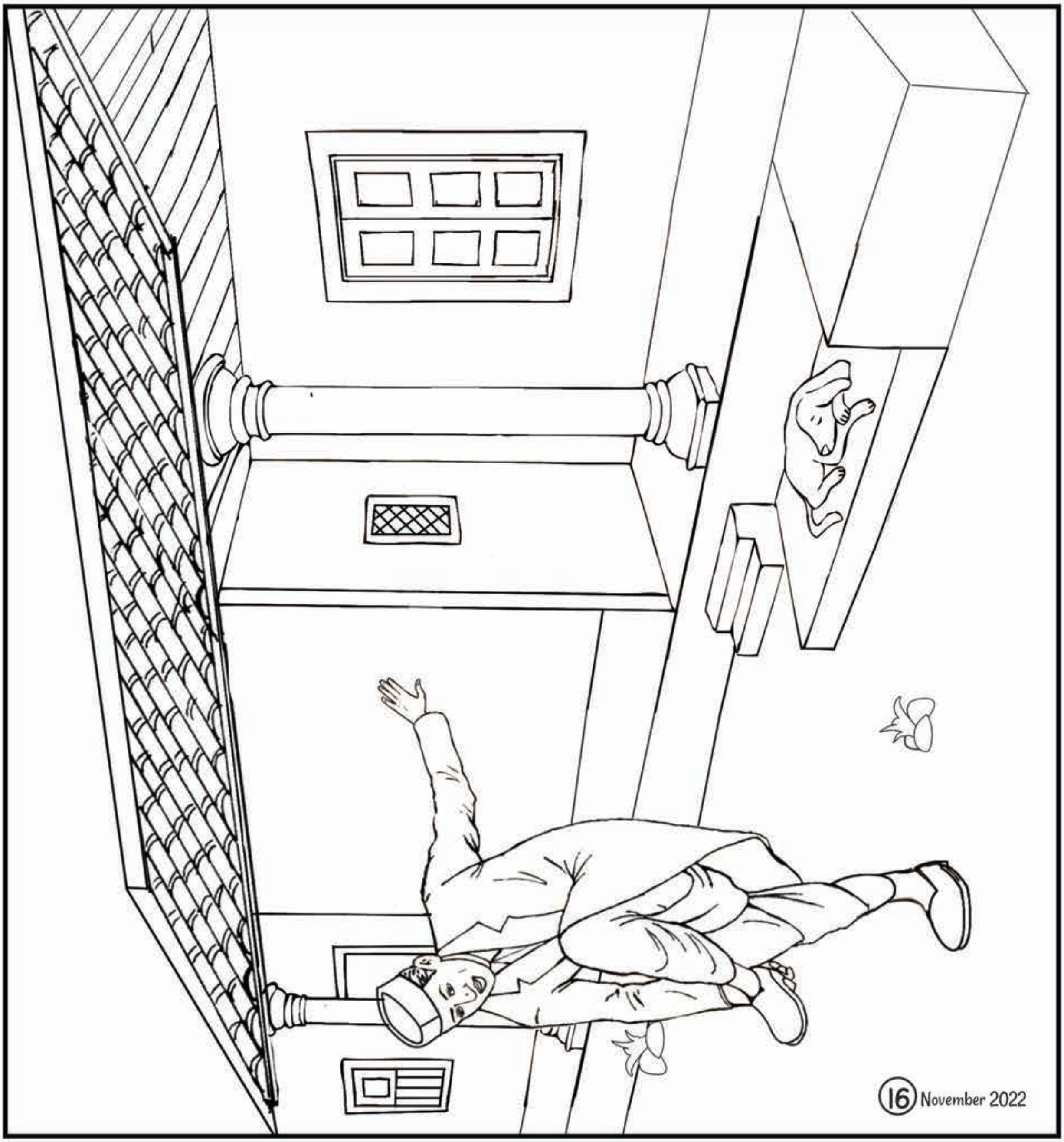

हम तो राजा हैं

एक बार दो बच्चे अपने फादर से पटाखे लेने के लिए ज़िद करने लगे। लेकिन उनके फादर के पास पटाखे खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। उन्होंने दादाश्री से बच्चों को समझाने के लिए हेल्प माँगी।

दादाश्री ने बच्चों को पूछा, "क्या आपको पटाखे फोड़ना बहुत पसंद है?"

बच्चों ने कहा, "पसंद तो होगा ही न! किसे पसंद नहीं होगा?"

तो दादाश्री ने बच्चों को समझाया, "राजा कभी भी खुद पटाखे नहीं फोड़ता। उसके सेवक फोड़ते हैं और वह देखता है। हम तो राजा हैं! इसलिए जब लोग पटाखे फोड़ते हों तब हमें देखना चाहिए। फोड़ने वाला तो सुख नहीं ले सकता। वह तो डर में ही रहता है।"

दोनों बच्चों को ऐसी समझ फिट हो गई कि उनका हमेशा के लिए पटाखे फोड़ना छूट गया।

ज्ञानी का अनोखा तरीका

दादा का कॉन्ट्रेक्ट का कारोबार था। यह बात १९७२-७३ की है। बॉम्बे की एक कंपनी की तरफ से दादा को बेलापुर में जेटी बाँधने का कॉन्ट्रेक्ट मिला था।

जेटी बाँधने का सबसे सस्ता टेन्डर दादा का था। दादा का टेन्डर सिर्फ १६ लाख का था। दूसरा सबसे सस्ता टेन्डर ३६ लाख का था। दादा के टेन्डर में और दूसरे टेन्डर में काफी अंतर था।

इतने सस्ते में जेटी बनाने के लिए जेटी का पूरा डिज़ाइन दादा ने खुद तैयार किया था।

जेटी के लिए कंपनी का अपना डिज़ाइन यूरोप के किसी आर्किटेक्ट ने बनाया था। एक तरफ दादा का डिज़ाइन था और दूसरी तरफ यूरोपियन आर्किटेक्ट का डिज़ाइन था। अब दोनों में से कौन सा डिज़ाइन सिलेक्ट करना है, यह कंपनी को तय करना था।

बहुत विचार विमर्श करके तथा कई मीटिंग्स करने के बाद, आखिरकार कंपनी ने दादा के डिज़ाइन को मंजूरी दे दी। और पूरी जेटी उसी डिज़ाइन से बनी। दादा का डिज़ाइन सबसे सस्ता और सबसे मजबूत था। दादा का डिज़ाइन इतना अनोखा था कि कंपनी ने

उस डिज़ाइन को फ्रेम करवाकर दिवाल पर लगवाया था।

उसी कंपनी का एक सिख इंजीनियर बेवज़ह गल्तियाँ निकालता और काम को रुकवा देता था। यह काम एक निश्चित समय सीमा के भीतर पूरा करना था। वह किसी की बात नहीं मानता इसलिए अंत में दादा उस इंजीनियर के पास गए और उन्होंने उसे ड्रामेटिकली फटकारा। इसका इंजीनियर पर गहरा असर हुआ। उसे पूरी रात नींद नहीं आई। नींद में भी उसे दादा का चेहरा दिखाई दे रहा था। दूसरे दिन उसने अपनी गलती स्वीकार कर ली और उसने खुद ही दादा को सब कुछ सॉल्व करने के लिए बुलाया।

दादा फिर से उसके ऑफिस गए। उसके सिर पर हाथ फेरकर प्रेम से उसके साथ बातचीत की। उसके बाद उस भाई के मन का समाधान हो गया और उसने फिर कभी कोई प्रॉब्लम खड़ा नहीं किया। और अच्छी जेटी बनकर तैयार हो गई।

कठिन मामलों को सुलझाने का ज्ञानी का तरीका कितना अनोखा होता है!

Akram Express
November 2022
Year : 10, Issue :8
Conti. Issue No.: 116

BALVIGNAN

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

The Happy Kid

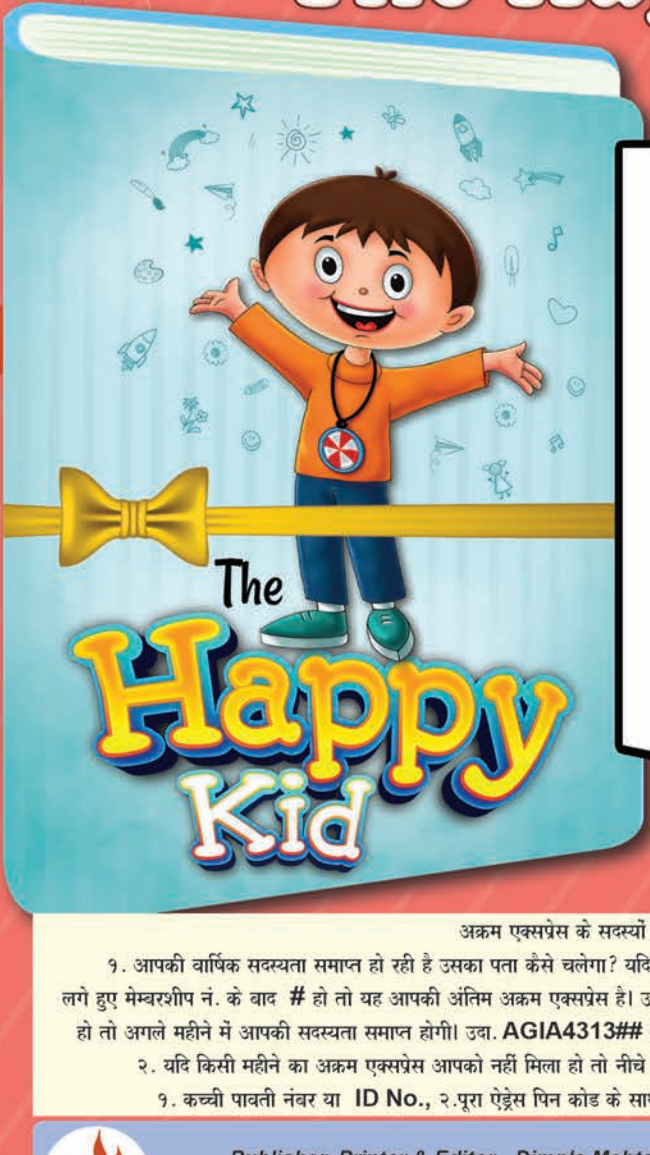

चलो मिलते हैं एक हैपी किड से, जो ले जाता है सीड-द सैड को एक हैपी टुर पर...तो क्या आपको भी बनना है इस स्टोरी का हीरो, द हैपी किड? तो यह बुक जरूर से पढ़ना।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. AGIA4313# और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. AGIA4313## अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर Whatsapp करें।

१. कच्ची पावती नंबर या ID No., २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025